पीडियाट्रिक एंडोक्रिनोलॉजी तथ्य चार्ट

जन्मजात हाइपोथायराइडिज्म: परिवारों के लिए मार्गदर्शक जानकारी

जन्मजात (कंजेनिटल) हाइपोथायराइडिज्म क्या है?

थायराइड ग्रंथि (ग्लैंड) एक छोटी सी, तितली के आकार की, हार्मोन बनाने वाली एंडोक्राइन ग्रंथि है । यह गले के निचले भाग में स्थित होती है । जब नवजात शिशु पर्याप्त मात्रा में थायराइड हार्मोन (T3: ट्राई-आयोडोथायरोनिन एवं T4: थायरोक्सिन) नहीं बना पाता, इस अवस्था को जन्मजात हाइपोथायराइडिज्म कहते हैं । जन्मजात हाइपोथायराइडिज्म लगभग 3000 से 4000 नवजात शिशुओं में से 1 में पाया जाता है । यह बीमारी अधिकतम बच्चों में स्थायी होती है और इलाज की जरूरत पूरी जिंदगी पड़ती है । थायराइड हार्मोन आपके बच्चे के मानसिक और शारीरिक विकास के लिए अत्यावश्यक है, इसलिए अनुपचारित जन्मजात हाइपोथायराइडिज्म से बौद्धिक एवं शारीरिक विकास में कमी हो सकती है । जन्मजात हाइपोथायराइडिज्म का अच्छा और आसान इलाज उपलब्ध है । इसलिए उचित समय पर डायगनोसिस और इलाज होने से आपका बच्चा एक सामान्य और स्वस्थ जीवन जी सकता है ।

जन्मजात हाइपोथायराइडिज्म के कारण क्या होते हैं?

जन्मजात हाइपोथायराइडिज्म के निम्न कारण हो सकते हैं । थाइरोइड ग्रंथि का :

- उचित विकास ना होना
- अनुपस्थित होना
- बहुत छोटा होना
- गले के किसी अन्य भाग में स्थित होना

कुछ बच्चों में थायराइड ग्रंथि का विकास तो उचित होता है, लेकिन वह ग्रंथि पर्याप्त मात्रा में थायराइड हार्मोन नहीं बना पाती । थायराइड हार्मोन का उत्पादन पिट्यूटरी ग्रंथि (Pituitary gland) के द्वारा नियंत्रित किया जाता है । कुछ बच्चों में पिट्यूटरी ग्रंथि से सही संकेत (TSH: थाइरोइड स्टिमुलेटिंग हार्मोन) नहीं मिल पाता। गर्भावस्था के दौरान ली गई कुछ दवाइयां भी जन्मजात हाइपोथायराइडिज्म पैदा कर सकती हैं, खासकर वो दवाइयां जो हाइपरथायराइडिज्म के इलाज के लिए ली जाती हैं । इस प्रकार का जन्मजात हाइपोथायराइडिज्म स्थायी नहीं होता । जन्मजात हाइपोथायराइडिज्म अक्सर विरासत में नहीं मिलता । इसका मतलब यह है कि यदि एक नवजात बच्चे को जन्मजात हाइपोथायराइडिज्म है तो आपके बाकी पैदा होने वाले बच्चों को यह बीमारी होने की संभावना कम है।

जन्मजात हाइपोथायराइडिज्म के लक्षण क्या होते हैं?

जीवन के पहले हफ्ते में जन्मजात हाइपोथायराइडिज्म के लक्षण जाहिर नहीं होते । हालांकि यदि हाइपोथायराइडिज्म काफी गंभीर हो, तब बच्चे में अत्यधिक नींद, कब्ज, कमजोर आवाज, कम भूक, और लम्बी अवधि तक पीलिया जैसे लक्षण देखे जा सकते हैं । इन बच्चों में मुंह की सूजन, कमजोर मांसपेशियां, विशाल जीभ और फूला हुआ पेट भी देखा जा सकता है ।

जन्मजात हाइपोथायराइडिज्म का डायगनोसिस कैसे होता है?

खून की जांच द्वारा जन्मजात हाइपोथायराइडिज्म का डायगनोसिस किया जाता है । जन्मजात शिशु की एड़ी से खून की जांच करके इस बीमारी का जल्दी ही पता लगाया जा सकता है । जन्मजात हाइपोथायराइडिज्म में थायराइड हार्मोन (Free T4) का स्तर कम और TSH का स्तर ज्यादा होता है । इस डायगनोसिस की पुष्टि करने के लिए बच्चे की नस से खून की जांच होती है । थायराइड ग्रंथि की अनुपस्थी और आकार ज़ाचने के लिए कुछ बच्चों में थायराइड अल्ट्रासाउंड भी करवाया जाता है ।

जन्मजात हाइपोथायराइडिज्म का इलाज कैसे होता है?

जन्मजात हाइपोथायराइडिज्म के इलाज के लिए लिवोथ्यरोकसिन (Levothyroxine) नामक दवाई का इस्तेमाल किया जाता है। यह एक सिंथेटिक थायराइड हार्मोन है। ज्यादातर बच्चों को इलाज की जरूरत पूरी जिंदगी पड़ती है। लिवोथ्यरोकसिन केवल गोली के रूप में उपलब्ध है और इसका कोई सिरप नहीं होता। इस गोली को दिन में एक बार लेना होता है। गोली को पीसकर, 1-2 चम्मच माँ के दूध (6 महीने की आयु से पहले) या पानी (6 महीने की आयु के बाद) में घोलकर चम्मच या ड्रॉपर द्वारा बच्चे को दे सकते हैं। आपके बच्चे के शारीरिक और मानसिक विकास के लिए यह दवाई अत्यधिक जरूरी है। बालचिकित्सक एंडोक्रिनोलोजिस्ट द्वारा नियमित रूप से जांच भी जरूरी है। लिवोथ्यरोकसिन की खुराक नियमित रूप से थायराइड हार्मोन के स्तर मॉनिटर करने से निर्धारित होगी। आपके बच्चे के बढ़ने के साथ-साथ उसकी लिवोथ्यरोकसिन की खुराक भी बढ़ेगी। कुछ खाद्य पदार्थ लिवोथ्यरोकसिन के अवशोषण में दखल देते हैं, जैसे की सोया दूध, आइरन और कैल्शियम। इन्हें लिवोथ्यरोकसिन के 3-4 घंटे बाद ही लें।

लिवोथ्यरोकसिन के कुछ ही दुष्प्रभाव हैं। वह दुष्प्रभाव आमतौर पर ज्यादा मात्रा में लिवोथ्यरोकसिन लेने की वजह से होते हैं। नियमित रूप से थायराइड हार्मोन के स्तर मॉनिटर करने से दुष्प्रभाव से बचा जा सकता है।

यह जानकारी पीडियाट्रिक एंडोक्राइन सोसाइटी के मरीज शिक्षा अनुभाग की सहायता से छपी है।

PES PEDIATRIC ENDOCRINE SOCIETY